ISSN No. 2395-5074

शोध विचार

ए मल्टी डिसीपिलीनरी जर्नल

SHODH VICHAR

A MULTI DISCIPLINARY JOURNAL

शासकीय नेहरू अग्रणी महाविद्यालय, अशोकनगर की बहुविषयक शोध पत्रिका

A Multi Disciplinary Research Journal of
Govt. Nehru (Lead) College, Ashoknagar (M.P.)

शासकीय नेहरू अग्रणी महाविद्यालय

अशोकनगर (म.प्र.) 473331 द्वारा प्रकाशित

Published by Government Nehru (Lead) College
Ashoknagar (M.P.) 473 331
Phone : 07543-220834, Email : hegndcash@nic.in

Scanned by CamScanner

सम्पादक मण्डल एवं सलाहकार समिति

संरक्षक

डॉ. डी.आर. राहुल

प्राचार्य

सम्पादक

डॉ. रेणु राजेश

प्राध्यापक वनस्पति विज्ञान विभाग एवं प्रभारी शोध समन्वय एवं विकास प्रकोष्ठ

महाविद्यालयीन सलाहकार समिति

डॉ. ए.के. शर्मा

प्राध्यापक वाणिज्य

डॉ. ए.के. जैन

प्राध्यापक वाणिज्य

डॉ. पी.के. सुराना

प्राध्यापक वाणिज्य

डॉ. एस.के. तिवारी

प्राध्यापक राजनीति विज्ञान

डॉ. अर्चना

सहायक प्राध्यापक अंग्रेजी

डॉ. ए.के. श्रीवास्तव

सहायक प्राध्यापक रसायन विज्ञान

डॉ. ए.एस. लहरिया

सहायक प्राध्यापक भौतिक विज्ञान

Scanned by CamScanner

रिव्यूअर मण्डल

1. **डॉ. देवाशीष बैनर्जी** – रिटायर्ड प्रोफेसर, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उ.प्र.)
2. **डॉ. मृदुला बैनर्जी** – रिटायर्ड प्रोफेसर, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उ.प्र.)
3. **डॉ. के. कपूर** – रिटायर्ड प्रोफेसर, मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर (राज.)
4. **डॉ. बामनिया** – प्राध्यापक पर्यावरण विज्ञान, मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर (राज.)
5. **डॉ. देवेश शर्मा** – इतिहास विभाग, एन.ए.एस. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मेरठ (उ.प्र.)
6. **डॉ. प्रीति कौशिक** – संस्कृत विभाग, डॉ. जाकिर हुसैन कॉलेज, दिल्ली
7. **डॉ. अनीता** – वनस्पति विज्ञान विभाग, देशबन्धु कॉलेज, दिल्ली
8. **डॉ. सुरेश कुमार** – वनस्पति विज्ञान विभाग, रामजस कॉलेज, दिल्ली
9. **डॉ. व्ही.के. श्रोत्रिये** – विधि विभाग, शासकीय एम.एल.बी. महाविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)
10. **डॉ. अंजुली शर्मा** – विधि विभाग, शासकीय एम.एल.बी. महाविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)
11. **डॉ. विक्रम चौधरी** – गवर्मेन्ट स्टेट लॉ कॉलेज, भोपाल (म.प्र.)
12. **डॉ. एम.आर. साहू** – प्राचार्य, बी.व्ही.एम. कॉलेज, ग्वालियर (म.प्र.)
13. **डॉ. के.एस. ठाकुर** – एस.ओ.एस. इन कॉमर्स, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)
14. **डॉ. एस.के. सिंह** – एस.ओ.एस. इन कॉमर्स, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)
15. **डॉ. संजीव गुप्ता** – वाणिज्य संकाय, शासकीय एम.एल.बी. महाविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)
16. **डॉ. ए.के. उपाध्याय** – प्रभारी प्राचार्य, शासकीय महाविद्यालय गोहद, भिण्ड (म.प्र.)
17. **डॉ. अल्का तोमर** – विभागाध्यक्ष राजनीति शास्त्र विभाग, बी.एस.एम. पी.जी. कॉलेज रूढ़की (उत्तराखण्ड)
18. **डॉ. आर.डी. मिश्र** – पूर्व प्राचार्य, शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय सागर (म.प्र.)
19. **डॉ. बी.एल. अहिरवार** – प्राचार्य शासकीय गणेश शंकर विद्यार्थी महाविद्यालय मुंगावली (म.प्र.)
20. **डॉ. डी.आर. पचैया** – प्राचार्य, शासकीय महाविद्यालय आलमपुर, भिण्ड (म.प्र.)
21. **डॉ. एन.एस. उपाध्याय** – प्राध्यापक विधि शासकीय स्नातकोत्तर उत्कृष्ट महाविद्यालय दतिया (म.प्र.)
22. **डॉ. रतन सूर्यवंशी** – प्राध्यापक वाणिज्य, शासकीय स्नातकोत्तर उत्कृष्ट महाविद्यालय दतिया (म.प्र.)

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

क्रमांक	शोधपत्र का शीर्षक	लेखक का नाम	पृष्ठ संख्या
	कला संकाय		
1.	भक्तियुगीन सांस्कृतिक सामासिकता : युगचेतना के संदर्भ में	डॉ. डी.आर. राहुल	1
2.	श्री रामचरित मानस में जीवन मूल्य	डॉ. आर.एस. रघुवंशी	5
3.	रविन्द्रनाथ टैगोर की कहानियाँ और छायावादी रचना भूमि	डॉ. इला द्विवेदी	8
4.	उद्यमिता विकास से रोजगार के नये आयाम	डॉ. (श्रीमती) जयश्री त्रिवेदी	11
5.	दतिया कलम की चित्रकला	श्रीमती पुष्पा गहोई	13
6.	भारतीय किसान : संघर्ष, चुनौतियां और 21वीं शताब्दी	डॉ. आर.एस. दांगी	18
7.	महिला सशक्तिकरण : संघर्ष के साथ नवीन आयाम	डॉ. (श्रीमती) संगीता भटनागर	21
8.	अश्वघोष की आध्यात्मिक सौन्दर्य दृष्टि – (सौन्दरनन्द के सन्दर्भ में)	डॉ. रामहेत गौतम	24
9.	विश्व प्रसिद्ध चंदेरी साड़ियाँ	प्रो. प्रियंका जैन	30
10.	गांव–गांव गोवर्धन	नीरज शुक्ला	32
11.	बुन्देली लोक साहित्य और डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त	राजीव कुमार श्रीमती प्रतिमा शोभने	34
12.	दहेज समस्या का बढ़ता प्रभाव कन्या भ्रूण हत्या के लिए जिम्मेदार एक अध्ययन	कु. गंगीता शर्मा	36
13.	भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव	कु. नेहा जैन	38
14.	हिन्दी बाल कविता में नैतिकता एवं आदर्श	डॉ. उदय सिंह जाटव	41
15.	मुगलकाल की चित्र शैली की विशेषताएं	नम्रता चौकोटिया	44
	वाणिज्य संकाय		
16.	भारत में उर्वरक उद्योग का विकास : एक अवलोकन	डॉ. ए.के. शर्मा डॉ. पी.के. सुराना	46
17.	विश्व व्यापार संगठन	डॉ. ए.के. जैन	52

Scanned by CamScanner

अश्वघोष की आध्यात्मिक सौन्दर्य दृष्टि – (सौन्दरनन्द के सन्दर्भ में)

डॉ. रामहेत गौतम
सहायक प्राध्यापक संस्कृत
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर म.प्र.
Email- drrhgautam@gmail.com
mob.n. 8827745548,9755494128

मङ्गलाचरण :–

रिरंसा यदि ते तस्मादध्यात्मे धीयतां मनः।
प्रशान्ता चानवद्या च नास्त्यध्यात्मसमा रतिः।।[1]

अर्थात् यदि तुम आनन्द चाहते हो, तो आत्मविषयक ज्ञान में मन लगाओ। क्योंकि शान्त और निर्दोष अध्यात्म की तरह कोई दूसरा आनन्द नहीं है।

प्रस्तावना :–

अध्यात्म का सौन्दर्य सार्वकालिक आनन्द प्रदान करता है। भिख्खु आनन्द के मुख से महाकवि अश्वघोष का यह संदेश समस्त मानव जगत के लिए है। इस सन्देश को जन–जन तक पहुँचाने के लिए महाकवि ने काव्य को माध्यम बनाया है। सौन्दरनन्द के माध्यम से महाकवि ने आध्यात्मिक सौन्दर्य की स्थापना की है। इस आध्यात्मिक सौन्दर्य को मैंने अपने शोध का विषय बनाया है। सौन्दरनन्द के आध्यात्मिक सौन्दर्य पर चर्चा करने से पूर्व सौन्दर्य के विषय में जान लेना आवयश्क है। सौन्दर्य क्लेदनार्थक उन्दि धातु से निष्पन्न हुआ है जिससे ध्वनित होता है कि वह भोक्ता को कहीं न कहीं आर्द्र करता है। सुन्दर वही है जो आर्द्र करे, आनन्दित करे, रिक्त नहीं। इसीलिए मनुष्य प्रत्येक वस्तु को सरस, सुन्दर और सार्वकालिक (चिरस्थायी) बनाना चाहता है। जीवनोपयोगी समस्त वस्तुओं में सदोपयोगिता व आनन्दसौन्दर्य का साक्षात्कार ही मानव का अभीष्टतम है। प्रत्येक प्राणी दुःख से पलायन कर अमृत प्राप्त करना चाहता है अतः उपनिषद् कहती है–

असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतं गमय।[2]

आनन्द तरंग मानव हृदय में सदा संव्याप्त रहती है जो विविध कलाओं के माध्यम से समय–समय पर प्रस्फुटित होती रहती है। आनन्दोपासना जीवन की सार्वदेशिक व सार्वकालिक प्रवृत्ति है। यह आनन्दोपासना मानवजगत के विविध क्रिया–कलापों में भी प्रतिबिम्बित होती है। काव्य कवि की आनन्दमयी तरंग का ही अन्य रूप है, क्योंकि सौन्दर्य और आनन्द का उपासक मानव अपनी अभिव्यक्ति के माध्यम से ऐसा सौन्दर्य देखना चाहता है, जिससे दूसरे व्यक्ति को आनन्दित करने के साथ–साथ स्वयं भी आनन्दविभोर हो उठता है। महाकवि अश्वघोष की काव्यप्रवृत्ति का प्रयोजन भी यही है।

परिकल्पना :–

ज्ञान के अभाव में दुःख का भाव होता है, परिणामस्वरूप दुःख में आत्म–संकोच (ह्रास) होता है। जबकि ज्ञान सुख–साधन है। अज्ञाननाश से दुःखानुभूति का क्षय हो जाता है, फलतः सुख में आत्म विस्तार होता है। दुःख, वेदना एवं करुणा से विगलित सहृदय मन में आनन्दोपलब्धि की उत्कट आकांक्षा होती है। बुद्धोपदिष्ट नन्द की भाँति त्रिरत्नानुशीलन से नित्यानन्द (आध्यात्मिक आनन्द) शक्य है।

परिसीमा :–

कवि की भावाभिव्यक्ति काव्य में परिणत होती है। वह अपने सामाजिक जीवन में दूसरे व्यक्तियों के सम्पर्क में आकर सुख–दुःख, आशा–निराशा, हर्ष–विषाद्, ईर्ष्या–द्वेष, मान–अपमान, उत्साह–घृणा आदि का अनुभव करता हुआ दूसरे लोगों के सुख–दुःख से प्रभावित भी होता है। उसके मन–मस्तिष्क पर सामाजिक जीवन के इन विभिन्न रूपों का प्रभाव पड़ता है। इन अनुभूतियों की भाषा के माध्यम से सशक्त, सरस और कलापूर्ण अभिव्यंजना ही काव्य है। इसे आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी जी ने लोकानुकीर्तन कहा है। लोकानुकीर्तनम् काव्यम्।[3]

आदि काल से ही भारतीय मनीषी लोकहित के लिए प्रयत्नशील रहे हैं। आचार्य भरत भी लोकहितार्थ नाट्य की सृष्टि करते हुए कहते हैं–

दुखार्तानां श्रमार्तानां शोकार्तानां तपस्विनाम्।
विश्रान्तिजननं लोके नाट्यमेतद् भविष्यति।।[4]

लोक हितार्थ काव्यसृजन की धारा वैदिक ऋषियों से आरम्भ होकर वाल्मीकि, व्यास से होती हुई वर्तमान में भी निरन्तर प्रवहमान है। इसी अजस्र ज्ञानसरित परम्परा के कवियों में महाकवि अश्वघोष भी एक हैं। महाकवि अश्वघोष के महाकाव्यों में जहाँ एक ओर लावण्यमय काव्य सौन्दर्य के उत्कृष्ट प्रयोग देखने को मिलते हैं तो वहीं बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों का सफल प्रतिपादन

Scanned by CamScanner

भी प्राप्त होता है। सुवर्णाक्षीपुत्र का जन्म साकेत (अयोध्या) में माना जाता है। जिसके प्रमाणस्वरूप सौन्दरनन्द की पुष्पिका में आये निम्न श्लोक को उद्धृत किया जाता है–

सुवर्णाक्षीपुत्रस्य साकेतस्य भिक्षोराचार्यभदन्ताश्वघोषस्य महाकवेर्महावादिनः कृतिरियम्।[5]

मगधविजेता कनिष्क (78ई.) के सभाकवि अश्वघोष ने लोकदुःखतारक बुद्ध के जीवन को आधार बनाकर 'बुद्धचरित' महाकाव्य तथा बुद्ध के छोटे भाई नन्द के जीवन को आधार बनाकर ' सौन्दरनन्द' महाकाव्यों के साथ–साथ अन्य अनेक ग्रन्थों की भी रचना की। महाकवि अश्वघोष की काव्यकर्म प्रवृत्ति लोकहित मात्र के लिए थी, जिसकी घोषणा महाकवि स्वयं करते हैं–

इत्येषा व्युपशान्तये न रतये, मोक्षार्थगर्भा कृतिः
श्रोतृणां ग्रहणार्थमन्यमनसां, काव्योपचारात् कृता।
यन्मोक्षात् कृतमन्यदत्र हि मया, तत् काव्यधर्मात् कृतं
पातुं तिक्तमिवौषधं मधुयुतं, हृद्यं कथं स्यादिति।।[6]

अर्थात् मुक्ति धर्म की व्याख्या से परिपूर्ण यह रचना शान्ति लाभ के लिए है, न कि आनन्द देने के लिए, अन्यमनस्क श्रोताओं को आकृष्ट करने के लिए यह रचना काव्यशैली में रची गई है। इसमें मुक्ति धर्म के अतिरिक्त जो कुछ भी कहा गया है, वह केवल काव्यधर्म के अनुसार इसे सरस बनाने के लिए ही है। जैसे कटु औषधि को पीने के लायक बनाने के लिए मधु मिलाया जाता है।

कवि ने भौतिक विषयासक्त लोगों को काव्यानन्द के ब्याज से निर्वाणानन्द की ओर आकृष्ट करने का सफल उद्यम किया है। यद्यपि कवि निरासक्त है, किन्तु लोक–कल्याण के लिए कवि द्वारा अपने आप को लोक से तटस्थ रखते हुए लोक के लोगों के ज्ञानचक्षु उन्मीलित करने के लिए लोक के ही साधनों के विविध पहलुओं पर खुली चर्चा करते हुए उनके वास्तविक स्वरूप को लोगों के सामने लाया गया है। नन्द और सुन्दरी के ऐश्वर्य भोगमय जीवनाधारित काव्य का सामान्य रसिक मुमुक्षु होकर मुक्ति पाने के लिए उत्कण्ठित हो उठता है।

शोधविधि :–

सौन्दरनन्द के आध्यात्मिक सौन्दर्य के आस्वादन के लिए समीक्षा पूर्वक अनुशीलनात्मक विधि का आश्रय लिया गया है।

तथ्य संकलन :–

कवि ने काव्य के आरम्भ से ही आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक तीनों स्तर के सौन्दर्य में तुलनात्मक विवेचन प्रस्तुत किया है। आधिभौतिक और आधिदैविक सौन्दर्य के भोक्ता नन्द को तथा आध्यात्मिक सौन्यर्य के भोक्ता बुद्ध को अपनी आध्यात्मिक अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया है। आधिभौतिक सौन्दर्य का भोक्ता नन्द तुष्टि तथा शान्ति नहीं पाता और वह आधिदैविक सौन्दर्य भोग के लिए आसक्त्यग्नि में जलने लगता है। नन्द स्वयं कहता है कि–

यथा प्रतप्तो मृदुनातपेन, दह्येत कश्चिन्महतानलेन।
रागेण पूर्व मृदुनाभितप्तो, रागाग्निनानेन तथाभिदह्ये।।[7]

अर्थात् जैसे हल्कि अग्नि से जला हुआ कोई व्यक्ति विशिष्ट आग में जले, उसी प्रकार पहले सामान्य आसक्ति से सन्तप्त मैं नन्द अब इस महान आधिदैविक सौन्दर्य अप्सरा भोग की आग में झुलस रहा हूँ।

जबकि बुद्ध आत्माश्रित, आत्मानुशासित हैं, उनमें हेतुबल की अधिकता तथा मूलशक्ति की प्रधानता है, बिना किसी विशिष्ट गुरू के मार्गदर्शन के अपना मार्ग स्वयं प्रशस्त करते हैं और सबसे कहते हैं– 'अप्प दीपो भव'। बृद्ध,रोगी और मृतदेह दर्शन जैसी जगत की घटनायें ही उनकी सहायक बनती चली जाती हैं, और वे सत्य की खोज में उन समस्त ऐश्वर्य भोगों को ठुकराकर वन चले जाते हैं जिन भोगों के चंगुल में उनका अनुज नन्द आकण्ठ डूबा हुआ है। दैहिक सौन्दर्य अभिलासी नन्द बाहरी वस्तुओं को प्रधानता देता है। वह उनके मोहजाल जकड़ से आसानी से नहीं छूट पाता। उसे वासना के दलदल से निकालने के लिए बुद्ध को अपने शिष्य आनन्द के साथ निरन्तर लम्बा प्रयास करना पड़ता है। नन्द का यह भौतिक सौन्दर्य भोग ऐन्द्रिय स्तर का है। ऐन्द्रिय स्तर का सौन्दर्यभोग व्यक्ति की शक्ति क्षीण कर उसे रिक्त करता है तब व्यक्ति सौन्दर्य का भोक्ता न होकर सौन्दर्य का भोग्य बन जाता है और व्यक्ति निःशेष मात्र रह जाता है। नन्द सुन्दरी के भौतिक अनित्य दैहिक सौन्दर्य मात्र के प्रति आसक्त होकर निःशेषप्रज्ञ रह जाता है।

ऐन्द्रिय सौन्दर्य क्षणिक है जबकि अध्यात्मिक सौन्दर्य अनन्त है। अतः कहा जा सकता है कि आध्यात्मिक सौन्दर्य संयम परक है। जो बाद में संयम की जगह सौन्दर्य में पर्यवसित हो जाता है। ज्ञानासक्ति उन्नयनकारी राग है जो पर की ओर से हटाकर स्वात्म की ओर आकृष्ट करता है। यह आध्यात्मिक सौन्दर्य बोध की आरम्भिक अवस्था है। जब साधक की समस्त कामनायें तिरोहित हो जाती हैं, तब वह राग–द्वेष से शून्य अवस्था को पाने पर अभीष्ट के खोने और अनिष्ट के प्राप्त होने के भय से मुक्त होकर साधक स्व से हटकर स्व–पर के भेद को मिटाकर एक रस हो जाता है।

व्याख्या एवं विश्लेषण :–

सम्पूर्ण जगत त्रिविध सौन्दर्य से व्याप्त है– आधिभौतिक सौन्दर्य, आधिदैविक सौन्दर्य और आध्यात्मिक सौन्दर्य। इनमें से आधिभौतिक सौन्दर्य और आधिदैविक सौन्दर्य अनित्य हैं,

Scanned by CamScanner

जबकि तीसरा आध्यात्मिक सौन्दर्य सार्वकालिक आनन्द है। सौन्दरनन्द की सौन्दर्य दृष्टि संयमपरक है, जो पूर्णता पर स्वाभाविक आनन्दानुभूति में पर्यवसित हो जाती है। सौन्दरनन्द में सौन्दर्य की अनुभूति को अनुभव करने वाले नन्द की यथावसर पात्रता के आधार पर पदार्थो को तीन प्रकार से बांटा जा सकता है–

आधिभौतिक सौन्दर्य भोग– विवेक तथा संयमद्ध आत्मानुशासनत्र रहित भोग। नन्द की सुन्दरी के प्रति आसक्ति इसी प्रकार के सौन्दर्यभोग की है। हम देखते हैं कि नन्द मिथ्या राग के वशीभूत होकर पत्नी प्रेम और गुरु–गौरव के मध्य जलतरंगों पर उत्तोलित राजहंस की भांति न आगे बढ़ पाता है और न प्रिया के पास ही ठहर पाता है।

तं गौरवं बुद्धगतं चकर्ष, भार्यानुरागः पुनराचकर्ष।
सोऽनिश्चयान्नापि ययौ न तस्थौ, तुरंस्तरङ्गेष्विव राजहंसः।।[8]

इतना ही नहीं भिक्षु वेष धारण करने के बाद भी नन्द लम्बे समय तक ऐन्द्रिय सौन्दर्य के आकर्षण से मुक्त नहीं हो पाता और आनन्द से कहता है–

अहं ग्रहीत्वापि हि भिक्षुलिङ्गं, भ्रातृषिणा द्विर्गुरुणानुशिष्टः।
सर्वास्ववस्थासु लेभे न शान्तिं, प्रियवियोगादिव चक्रवाकः।।[9]

अर्थात् यद्यपि मैंने भिख्खु वेश धारण कर लिया है, तथा अग्रज एवं मुनि द्विविध व्यक्तित्व वाले गुरु भगवान बु से उपदेश ग्रहण कर लिया है फिर भी प्रिया विहीन चकवे की भाँति शान्ति नहीं पा रहा हूँ। नन्द के इस कथन से ध्वनित होता है कि भिख्खु का वेश बना लेने अथवा महान से महान व्यक्ति से दीक्षा लेने मात्र से अभीष्ट की सिद्धि नहीं होती आत्मसमर्पण आवश्यक है। नन्द बार–बार पत्नी के वचनों को याद करता है– चजिंल एवं अश्रुपूर्ण नेत्रों वाली सुन्दरी ने आते समय मुझसे कहा था कि– मेरे अङ्गराग के सूखने से पहले ही तुम आ जाना। उसका यह कथन आज भी मेरे मन को मथ रहा है।[10]

मुक्ति पाने का इच्छुक परन्तु पत्नी विरह से व्यथित भिक्षु नन्द के प्रति अन्य भिक्षु कहता है–

किमिदं मुखमश्रुदुर्दिनं, हृदयस्थं विवृणोति ते तमः।
धृतिमेहि नियच्छ विक्रियां, न हि वाष्पश्च शमश्च शोमते।।[11]

अश्रुपूरित तुम्हारा मुँह तुम्हारे मन के मैल को व्यक्त कर रहा है। मनोवेग को रोककर धैर्य धारण करो क्योंकि आँसू और शान्ति एक साथ नहीं शोभते।

भिक्षुओं के द्वारा समझाने के बाद भी नन्द के भौतिक सौन्दर्य भोग के लिए व्यग्र होने पर उसके मन के मैल को धोने के लिए उसका हाथ पकड़कर बुद्ध दिव्यलोक के लिए उड़ जाते है।

पाणौ गृहीत्वा वियदुत्पपात, मलं जले
साधुरिवोज्जिहीर्षुः।।[12]

नन्द को इस अनित्य सौन्दर्यभोग की पीड़ादायी आसक्ति से मुक्त करने के लिए इस अनित्य आसक्ति के सम्पूर्ण व वास्तविकता को उद्घाटित करने के लिए बुद्ध नन्द को आधिभौतिक सौन्दर्यभोग की तुलना में आधिदैविक सौन्दर्यभोगों की दुनिया में ले जाते समय मार्ग में पूछते है–

का नन्द रूपेण च चेष्टया, च सम्पश्यत श्चारुतरा मता ते।
एषा मृगी वैकविपन्नदृष्टिः स, वा जनो यत्र गता तवेक्ष्टः।।[13]

अरे नन्द! तुम्हारे विचार से रूप और विलास में कौन अधिक सुन्दर दिखलायी पड़ रहा है, वह कानी वानरी या जिससे तुम्हारी आसक्ति है वह?

नन्द उत्तर देते हुए कहता है–

क्व चोत्तमस्त्री भगवन् वधूस्ते, मृगी नगक्लेशकरी क्व चैषा।।[14]

हे भगवन्! कहाँ तो दिव्यसुन्दरी आपकी अनुजवधू और कहाँ यह पेड़ों को पीड़ित करने वाली बन्दरी?

बु ने नन्द का सुन्दरी के प्रति देहस्तरीय अनुराग नष्ट करने के लिए स्वर्ग की अपसराओं को दिखाते हुए पूछा कि–

एताः स्त्रियः पश्य दिवौकसस्त्वं, निरीक्ष्य च ब्रूहि
यथार्थतत्त्वम्।
एताः कथं रूपगुणैर्मतास्ते, स वा जनोयत्र गतं मनस्ते।।[15]

अर्थात् तुम इन देवाङ्गनाओं को देखकर बताओ कि रूप और गुण में इन अपसराओं के विषय में तथा जिसमें तुम्हारा मन आसक्त है उस व्यक्तिविशेष के विषय में तुम्हारा क्या विचार है?

तब नन्द का सुन्दरी के प्रति अनुराग सिथिल हो जाता है और देवाङ्गनाओं के प्रति आसक्त होकर कहता है कि– हे नाथ! आपकी वधू की तुलना में कानी बानरी की जो स्थिति है, वही स्थिति इन अपसराओं की तुलना में आपकी वधू की है। जिस प्रकार अपनी पत्नी को देखने के पश्चात् किसी और स्त्री में मेरी रुचि नहीं होती थी, उसीप्रकार अब इन अपसराओं को देखने के पश्चात् मेरी रुचि मेरी पत्नी सुन्दरी में नहीं हो रही है।[16]

इस प्रकार आधिभौतिक सौन्दर्य भोग के प्रति नन्द की आसक्ति तिरोहित होकर आधिदैविक सौन्दर्य भोग के प्रति और अधिक बलवती हो उठती है। अब नन्द सामान्य आसक्ति आधिभौतिक सौन्दर्य आसक्ति की अपेक्षा महान आसक्ति आधिदैविक सौन्दर्यभोग में जलने लगता है। इस प्रकार का नन्द का सौन्दर्यभोग देहस्तरीय मात्र होने से त्याज्य है क्योंकि यह अधःपतन की ओर आकृष्ट करता है। अनित्यसौन्दर्यभोग की लपटों में झुलसता हुआ नन्द कहता है कि–

वाग्वारिणा मां परिषिञ्च तस्म द्यावन्न दहये स इवाब्जशत्रुः।
रागाग्निरद्यैव हि मां दिधक्षुः, कक्षं सवृक्षाग्रमिवोत्थितोऽग्निः।।[17]

दावाग्नि के द्वारा वृक्षाग्र सहित सूखे जंगल को जलाने के समान आसक्ति की आग आज मुझे जला डालना चाहती है, हे देव! वाणीरूपी जल से मुझे सींचिये ताकि मैं अब्जशत्रु की तरह न जलूँ।

तब बुद्ध ने नन्द से कहा–

''धृति परिष्वज्य विधूय विक्रियां, निगृह्य तावच्छ्रुतचेसी श्रृणु।
इमा यदि प्रार्थयसे त्वमङ्गना, विधत्स्व शुल्कार्थमिहोत्तमं तपः।।''[18]

धीरज के साथ मन के विकारों को दूर करो और कान खोलकर, मन को नियंत्रित कर सुनो। यदि इन स्त्रियों की इच्छा करते हो तो इनकी कीमत चुकाने के लिए यहीं पर उत्तम तप करो।

आदिभौतिक सौन्दर्यभोगों की अपेक्षा आधिदैविक सौन्दर्यभोग नन्द को आकर्षित करते हैं।

आधिदैविक सौन्दर्यभोग–

दिव्यलोकगत सौन्दर्यभोगों का वर्णन करते हुए कवि लिखते हैं कि–

यत्रेष्टचेष्टाः सततप्रहृष्टा, निरर्तयो निर्जरतो विशोकाः।
स्वैः कर्मभिर्हीनविशिष्टमध्याः, स्वयम्प्रभाः पुण्यकृतो रमन्ते।।[19]

यहाँ इच्छानुसार काम करने वाले, सदा खुश रहने वाले, रोग–शोक और बुढ़ापा रहित, अपने ही कर्मो से उत्तम, मध्ययम और हीन होने वाले तथा अपनी ही प्रभा से प्रोद्भासित होने वाले पुण्यवान व्यक्ति रमण करते हैं।

स्वर्ग की अपसरायें सदा तरुणी रहती हैं, कामक्रीड़ा ही उनका एक मात्र कार्य है, सामान्यतः वे पुण्यकर्मियों के लिए उपभोग्य हैं, वे अलौकिक हैं, उन्हें स्वीकार करने में कोई दोष नहीं है, तपस्या के फलस्वरूप देवता उन्हें प्राप्त करते हैं।[20]

लेकिन तुम्हें बता दूँ–

ये अपसरायें शक्ति, सौन्दर्य, सेवा या कुछ देकर नहीं पाई जा सकती। केवल धर्माचरण से ही इन्हें प्राप्त किया जा सकता है। तो फिर यदि इन्हे पाना चाहते हो तो प्रसन्नता पूर्वक तप करो।[21]

तब चलेन्द्रिय नन्द ने कामासक्त होकर भी इन्द्रियों के लिए ही उसने इन्द्रियों पर नियंत्रण किया।[22] जिसं पत्नि को अत्यधिक चाहता था अब उसके विषय में अनासक्त रहने लगा था। उसकी चर्चा में उसे न क्षोभ होता और न हर्ष–

प्रस्तावेष्वपि मार्यायां, प्रियभार्यस्तथापि सः।
वीतरागं इवातरथौ, न जहर्ष न चुक्षुभे।।[23]

नन्द को भार्या के प्रति विमुख एवं तप में व्यवस्थित होता हुआ देखकर आनन्द नन्द से कहते हैं कि –

अहो सदृशमारब्धं,श्रुतस्याभिजनस्य च।
निगृहीतेन्द्रियः स्वस्थे, नियमे यदि संस्थितः।।[24]

अर्थात् आश्चर्य है ! तुम इन्द्रिय निग्रह कर स्वस्थ हो चुके हो, नियम पालन में स्थिर हो, तुमने अपने कुल एवं मर्यादा के अनुकूल आचरण का आरम्भ कर दिया है।

फिर भी तुम्हारे इस धैर्य और नियम पालन में मुझे एक संशय है, यदि कहने योग्य समझो तो कहूँ? सुनो –

अप्रियं हि हितं स्निग्धमस्निग्धमहितं प्रियम्।
दुर्लभं तु प्रियहितं, स्वादु पथ्यमिवौषधम्।।[25]

हितकारी प्रेमपूर्ण बातें सुनने में अप्रिय होती हैं। प्रेमरहित हित के विपरीत बातें सुनने मात्र में प्रिय लगती हैं। जिस प्रकार औषधि का रोग निवारक होने के साथ–साथ स्वादिष्ट होना दुर्लभ होता है उसी प्रकार हितकारी बात हमेशा कर्णप्रिय हो यह दुलर्भ है! अतः तुम्हारे हित के लिए मैं कहता हूँ कि एक बन्धन को त्यागकर दूसरे बन्धन में फंसने के लिए किये जा रहे तुम्हारे प्रयास पर मुझे हंसी भी आ रही है और तुम पर तरस भी। तुम्हारा यह तप व्यापारी के क्रय–विक्रय की भाँति बिकाऊ है, इससे तुम्हें शान्ति नहीं मिल शक्ति।

चिक्रीषन्ति यथा पण्यं, वणिजो लाभलिप्सया।
धर्मचर्या तव तथा, पण्यभूता न शान्तये।।[26]

यदि तुम सच्चा आनन्द चाहते हो तो आत्मविषयक ज्ञान में मन लगाओ, क्योंकि शान्त और निर्दोष अध्यात्म की तरह कोई दूसरा आनन्द नहीं है।[27]

आध्यात्मिक सौन्दर्य भोग–

आध्यात्मिक सौन्दर्य भोग आत्मानुशासित भोग है। इसमें रूपादि का सौन्दर्य बन्धन का कारण नहीं बनता। आनन्द कहते हैं कि–

न तत्र कार्यं तूर्यैस्त्, न स्त्रीभिर्न विभूषणैः।
एकरत्वं यत्रस्थस्तया, रत्याभिरंस्यसे।।[28]

उस अध्यात्म रति में तुम्हें तुरही, नारी या अलङ्कारों की आवश्यकता नहीं होगी। कहीं भी रहकर भी तुम अध्यात्म सुख में रमते रहोगे।

इस तृष्णा को काटो, जब तक तृष्णा रहेगी तब तक मन को कष्ट होगा ही क्योंकि दुःख और तृष्णा एक साथ आते और जाते हैं।

तृष्णा (इच्छा) ही दुःखमय सृष्टि (जगत) की मूल कारण है (''इच्छा हि जगतोमूलमिति बौद्धमतं शुभम्''29)

Scanned by CamScanner

महाकवि अश्वघोष ने अपने महाकाव्य बुद्धचरित में दुःख के कारण की कड़ियों को वर्णित किया है जो इस प्रकार हैं– सबसे बड़ा दुःख तो जरा–व्याधि–मृत्यु है। जरा–मरण का कारण जाति (जन्म लेना), जाति का कारण भव (जन्म लेने की इच्छा) है। भव का कारण उपादान (जगत की वस्तुओं के प्रति राग एवं मोह), उपादान का कारण तृष्णा (विषयों के प्रति हमारी आसक्ति), तृष्णा का कारण वेदना (अनुभूति), वेदना का कारण स्पर्शद्ध इन्द्रियों और विषयों के संयोग की अवस्था, स्पर्श का कारण षडायतन (आँख, नाक, कान, जिह्वा, त्वचा और मन), षडायतन का कारण नामरूप (मन के साथ गर्भस्थ शरीर), नामरूप का कारण विज्ञान (चेतना), विज्ञान का कारण संस्कार (कर्मफल), संस्कार का कारण अविद्या (अनित्य को नित्य, असत्य को सत्य, अनात्म को आत्म समझना) है। इस प्रकार अविद्या ही समस्त दुःखों का कारण है। इस तरह ये द्वादश निदान जीव को जन्म–मरण के चक्र में घुमाते रहते हैं। यही भवचक्र है। इन द्वादश दुःख कारणों की श्रृखला ही दुःख–समुदय है। इस श्रृखला में एक की प्राप्ति होने पर अन्य की उत्पत्ति होती है। यदि एक (कारण) नहीं होता, तो अन्य (कार्य) भी नहीं रहता। इसे आश्रित उत्पत्ति का सिद्धान्त, प्रतीत्यसमुत्पाद का सिद्धान्त कहा जाता है। दुःख के कारण की खोज हो जाने पर कारण के नाश के साथ दुःख से मुक्ति की सम्भावना बढ़ जाती है। अतः बुद्ध आश्वस्त करते हैं कि दुःख का नाश हो सकता है। दुःख का नाश मध्यममार्ग के परिशीलन से पूर्णतः हो जाता है।

विषयों की याचना में कष्ट है, मिलने पर संतोष नहीं होता, बिछुड़ने पर दुःख निश्चित है और स्वर्ग में भी उनसे विच्छेद भी निश्चित है। परदेशी की घर वापसी के समान कठोर तप से प्राप्त स्वर्ग भी पुण्य क्षीण हो जाने पर छूट जाता है। तब स्वर्ग का भोग भी उसे कोई आनन्द नहीं देता। शिवि, मान्धाता स्वर्ग से पतित हुए, नहुष ने स्वर्ग से पतित होकर सर्पयोनि पायी, इलिविल भी स्वर्ग से पतित होकर कछुआ बने, भूरिद्युम्न, ययाति भी स्वर्ग में न ठहर सके। सुरों द्वारा राज्यलक्ष्मी छीन लिए जाने पर असुरों को भी पाताल लोक जाना पड़ा। इन्द्र, उपेन्द्र आदि देवताओं को भी विलखते हुए स्वर्ग छोड़ना पड़ा।

सुखमुत्पद्यते यच्च, दिवि कागानुपाश्नताम्।
यच्च दुःखं निपपतां, दुःखमेव विशिष्यते।।[30]

स्वर्ग की कामोपासना से सुख अल्प तथा स्वर्ग के छूटने पर पीड़ा अधिक होती है।

स्वर्ग परिणाम में अशुभ है। वह रक्षक, विश्वसनीय, संतोषदायक न होकर छणिक है। ऐसा जानकर मुक्ति में मन लगाओ। मुक्ति की कामना करो।

अध्यात्म के स्तर का अनंग सूक्ष्म काम का सृष्टि के मंगल पक्ष में होना आवश्यक है। उसके बिना न सौन्दर्य का भोग हो सकता है, न भाव न महाभाव। **जगद्धिताय बुद्धो हि बोधमाप्नोति शाश्वतम्। अतैव जीवानां सर्वेषां तु हिते रतः।।**[31], में वर्णित जगतहितार्थ बुद्ध की बोधप्राप्ति तथा '**इत्येषा व्युपशान्तये न रतये मोक्षार्थगर्भा कृतिः**'[32] में लोक के शान्तिलाभ के लिए काव्यकर्मप्रवृत्ति इसी आध्यात्मिक सौन्दर्य भोग के लिए है।

बुद्ध और आनन्द के उपदेश से नन्द को आत्म बोध होता है। आनन्द के कथन– ''अप्सरोभृतको धर्मं चरसीत्यथ चोदितः।'' (अप्सराओं को पाने के लिए तप कर रहे हो।) को सुनकर नन्द लज्जित तथा उदास होकर वैरागी हो गया। अब उसे स्वर्ग की चाह नहीं रही। अप्सरा आदि स्वर्ग के भोगों के प्रति वैराग्य की भाँति नित्य आनन्द (निर्वाण) की तुलना में स्वर्ग के अप्सरा आदि भोगों के प्रति उसकी अभिलाषा जाती रही।

विसस्मार प्रियां भार्यामप्सरोदर्शनाद्यथा।
तथाऽनित्यतयोद्विग्न स्तत्याजाप्सरसोऽपि सः।।[33]

इस प्रकार नन्द धीरज की रक्षा कर, उद्योग का सहारा लेकर, आसक्ति का विनाश कर, शक्ति का संग्रह कर, वह शान्त चित्त नियन्त्रित और समाहित मन इन्द्रियों से विरक्त हो जाता है। नन्द के इस दृष्टांत से सिद्ध होता है कि साधक का स्वभाव ही उसकी शक्ति होती है। नन्द के अन्तःकरण में मोक्ष बीजरूप में था जिसे बु) ने पहचानकर पल्लवित किया। नन्द ने चार आर्य सत्यों को भली–भाँति जानकर उपायस्वरूप बुद्धमार्ग (मध्यम मार्ग/ अष्टांग मार्ग) के सम्यक् अनुशीलन व अभ्यास किया। नन्द में समस्त जगत के प्रति साम्यभाव जागृत हुआ और नन्द ने सार्वकालिक आध्यात्मिक सौन्दर्य की अनुभूति की। अनुभूति के साम्य का सौन्दर्य ही चेतना की पराकाष्ठा है जो आनन्द में विश्रान्ति पाती है। नन्द की अध्यात्म शक्ति की वृद्धि होने पर क्रमशः आसक्ति का क्षय होने के साथ–साथ आध्यात्मिक सौन्दर्य में उत्तरोत्तर वृद्धि होती है। आध्यात्मिक सौन्दर्य को अनुभूत कर नन्द कहता है कि –

न मे प्रियं किंचिंन नाप्रियं मे, न मेऽनुरोधेऽस्ति कुतोविरोधः।
तयोरभावात् सुखितोऽस्मि सद्यो, हिमातपाभ्यामिव विप्रमुक्तः।।[34]

मुझे न कुछ प्रिय है और न कुछ अप्रिय, न अनुरोध है और न विरोध, इन दोनों के अभाव से, मैं अब सर्दी–गर्मी के प्रभाव से मुक्त हुए की तरह सुखी हूँ।

निष्कर्ष :–

इस प्रकार हम देखते हैं कि सौन्दरनन्द में सौन्दर्य के त्याज्य व ग्राह्य दोनों रूप प्राप्त होते हैं। वैषम्यजनित क्षणिक सौन्दर्य

Scanned by CamScanner

त्याज्य है जबकि बुद्धिसाम्यभाव जनित आनन्द ही मानव जीवन का शाश्वत सौन्दर्य है। सौन्दरनन्द का सम्पूर्ण घटनाक्रम नन्द को क्षणिक सौन्दर्य से बाहर निकालकर शाश्वत सौन्दर्य में प्रतिष्ठित करने के लिए ही है। शाश्वत सौन्दर्य साधना से ही लभ्य है। जो कोई भी इस साधना को पूर्ण करता है। उसकी समाधि बु) की भाँति देह की भूमि पर भी भंग नहीं होती। समाधिस्थ एक बौद्ध सन्यासी को देखकर नन्द स्वयं कहता कि –

पुंस्कोकिलानामविचिन्त्य घोषं, वसन्तलक्ष्यामविचार्य चक्षुः।
शास्त्रं यथाऽभ्यस्यति चैव युक्तः, शङ्के प्रियाऽऽकर्षति नास्य चेतः।।[35]

यह भिक्षु शास्त्र के अध्ययन में इस तरह डूबा हुआ है कि इसे न तो कोयल की काकली की चिन्ता है और न वसन्त की श्री ही इसकी आँखों को अपनी ओर खींचती है। इससे स्पष्ट पता चलता है कि प्रिया इसके चित्त को आकृष्ट नहीं कर रही है।

नन्द के जीवन घटनाक्रम को देखने से स्पष्ट ज्ञात होता कि भौतिकता की भूमि से उपर उठे बिना सौन्दर्यराग उन्नयनकारी नहीं हो सकता जबकि ऊपर उठा हुआ सौन्दर्यराग भौतिकता को ग्राह्य नहीं बनाता। यही सौन्दर्य की सकारात्मक उपासना है। यह सचेत रहने पर ही सम्भव है। जैसे सचेत नन्द आध्यात्मिक सौन्दर्य के साक्षात्कार के बाद गुनगुना उठता है–

नमोऽस्तु तस्मै सुगताय येन, हितैषिणा मे करुणात्मकेन।
बहूनि दुःखान्यपवर्तितानि, सुखानि भूयांस्युपसंहृतानि।।[36]
तस्याज्ञया कारुणिकस्य शास्तु,र्हृदिस्थमुत्पाट्य हि रागशल्यम्।
अद्यैव तावत् सुमहत् सुखं मे, सर्वक्षये किं बत निर्वृतस्य।।[37]

अर्थात् उस सुगत को प्रणाम, जिस हितैसी– दयालु ने मेरे सारे कष्ट दूर कर अपार सुख दिया। उस दयालु शास्ता की आज्ञा से हृदयस्थल आसक्ति रूपी शूल को निकाल कर मैं आज ही महान सुख का अनुभव कर रहा हूँ। फिर सारे पदार्थो के क्षीण होने के बाद निर्वाण प्राप्त होने की तो बात ही क्या?

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि महाकवि अश्वघोष सदा सचेत व सच्चे काव्यकलाकार हैं। इस महाकाव्य में उनकी चेतना आध्यात्मिक सौन्दर्य के संस्कार से सुसंस्कृत होकर अभिव्यक्त हुई। उनके रचनात्मक विवेक से सम्पूर्ण महाकाव्य में आध्यात्मिक सौन्दर्य की सुन्दरता सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है जो मानवमात्र के अनुभव का विषय बनती है।

सन्दर्भ सूची–

1 सौन्दरनन्द–11.34
2 बृहदारण्यकोपनिषद्–1.3.28
3 अभिनवकाव्यालंकारसूत्र।
4 नाट्यशास्त्र प्रथम अध्याय कारिका–14
5 (द्बसौ.न.म.का.सर्ग–18 की पुष्पिका)।
6 सौन्दरनन्द–18.63
7 सौन्दरनन्द–10.51
8 सौन्दरनन्द 4–42
9 सौन्दरनन्द 7.17
10 यथैष्यनाश्यानविशेषकायां मयीति, यन्मामवदच्च साश्रु। पारिप्लवाक्षेण मुखेन बाला तन्मे वचोऽद्यापि मनो रुणद्धि।। सौन्दरनन्द 7.19
11 सौन्दरनन्द 8–2
12 सौन्दरनन्द 10/03
13 सौन्दरनन्द–10.16
14 सौन्दरनन्द–10.17
15 सौन्दरनन्द–10.48
16 हर्यङ्गनासौ मुषितैकदृष्टिर्यदन्तरे स्यात्तव नाथ वध्वाः। तदन्तरेऽसौ कृपणा वधूस्ते वपुष्मतीरप्सरसः प्रतीत्य।। सौ. 10.50
आस्था यथा पूर्वमभून्न काचिदन्यासु मे स्त्रीषु निशाम्य भार्याम्। तस्यां ततः सम्प्रति काचिदास्था न मे निशाम्यैव हि रूपमासाम्।। सौन्दरनन्द 10.51
17 सौन्दरनन्द–10.53
18 सौन्दरनन्द 10/59
19 सौन्दरनन्द–10.32
20 सदा युवत्यो मदनैककार्याः साधारणाः पुण्यकृतां विहाराः। दिव्याश्च निर्दोषपरिग्रहाश्च तपः फलस्याश्रयणं सुराणाम्।। सौन्दरनन्द 10.36
21 इमा हि शक्या न बलान्न सेवया न सम्प्रदानेन न रूपवत्तया। इमा ह्रियन्ते खलु धर्मचर्यया स चेत्प्रहर्षश्चर धर्ममादृतः।। सौ. 10.60
22 (तथा लोलेन्द्रियो भूत्वा दयितेन्द्रियगोचरः। इन्द्रियार्थवशादेव बभूव नियतेन्द्रियः।।सौन्दरनन्द 11.3)
23 सौन्दरनन्द–11.7
24 सौन्दरनन्द 11/9
25 सौन्दरनन्द 11/16
26 सौन्दरनन्द–11.26
27 रिरंसा यदि ते तस्मादध्यात्मे धीयतां मनः। प्रशान्ता चानवद्या च नास्त्यध्यात्मसमा रतिः।।सौन्दरनन्द 11.34
28 सौन्दरनन्द–11.35
29 बुद्धचरित 26/18
30 सौन्दरनन्द 11/54
31 बुद्धचरित – 15.28
32 सौन्दरनन्द–11.35
33 सौन्दरनन्द 12/7.
34 सौन्दरनन्द 17–67
35 सौन्दरनन्द 7–21
36 सौन्दरनन्द–17.63
37 सौन्दरनन्द–17.65

Scanned by CamScanner

ISSN No. 2395-5074

शोध विचार

SHODH VICHAR

बहुविषयक शोध पत्रिका

A Multi Disciplinary Research Journal

चातुर्मासिक, वर्ष–1, अंक–3, सितम्बर से दिसम्बर 2015

Four Monthly Vol. 1, No. 3, Sept. to Dec. 2015

शासकीय नेहरू अग्रणी महाविद्यालय, अशोकनगर की शोध पत्रिका

Multi Disciplinary Journal of

Govt. Nehru Lead College, Ashoknagar

मध्य प्रदेश शासन, उच्च शिक्षा विभाग के आदेश कमांक 754/156/आउशि/शाखा 5अ/2014, भोपाल दिनांक 16.10.2014 के परिपालन में शासकीय नेहरू अग्रणी महाविद्यालय अशोकनगर द्वारा एक बहु विषयक (Multi Desciplinary) शोध पत्रिका (Research Journal) शोध विचार का प्रकाशन नियमित किया जा रहा है। महाविद्यालयीन शिक्षक/शोधार्थी इस शोध पत्रिका के लिये शोध आलेख महाविद्यालय की ई–मेल आई.डी. पर भेज सकते हैं। शोध आलेख विभिन्न संकाय प्रभारियों के पास भी जमा कराये जा सकते हैं। विभिन्न संकाय प्रभारी निम्नानुसार हैं –

विज्ञान संकाय –

डॉ. रेणु राजेश, प्राध्यापक वनस्पति विज्ञान, शासकीय नेहरू महाविद्यालय, अशोकनगर

वाणिज्य संकाय –

डॉ. ए.के. शर्मा, प्राध्यापक वाणिज्य, शासकीय नेहरू महाविद्यालय, अशोकनगर

डॉ. ए.के. जैन, प्राध्यापक वाणिज्य, शासकीय नेहरू महाविद्यालय, अशोकनगर

डॉ. पी.के. सुराना, प्राध्यापक वाणिज्य, शासकीय नेहरू महाविद्यालय, अशोकनगर

कला संकाय –

डॉ. एस.के. तिवारी, प्राध्या. राजनीति शास्त्र, शासकीय नेहरू महाविद्यालय, अशोकनगर

डॉ. अर्चना, स. प्राध्या. अंग्रेजी, शासकीय नेहरू महाविद्यालय, अशोकनगर

विधि संकाय –

डॉ. विनोद कांकर, सहायक प्राध्यापक विधि, शासकीय विधि महाविद्यालय, अशोकनगर

शोध पत्र ए–4 साईज पर निम्नानुसार वर्ड फाईल में ई–मेल करें –

01. लेख का टाईटल– Times New Roman, Font 14, क्रतीदेव 10, फोन्ट साईज 18

02. लिखने वाले का नाम एवं अन्य विवरण (पद, महाविद्यालय का नाम, ईमेल, फोन नं.) – Times New Roman, Font 12, क्रतीदेव 10, फोन्ट साईज 14, बोल्ड, राइट सेमेट्री

03. एब्स्ट्रेक्ट 04. कीवर्डस 05. लेख 06.रिफरेंसेज

सभी (03 से 06 तक, Times New Roman, Font 12, क्रतीदेव 10, फोन्ट साईज 14)

07. लाईन स्पेसिंग 1।

08. रेफ्रेंसेज का फार्मेट – लेखक, शीर्षक, शोध पत्रिका/बुक का नाम/अंक, पेज कमांक, वर्ष

09. शोध आलेख में ग्राफ, चित्र, सारणी आदि यथासंभव उचित स्थान पर हों।

(डॉ. रेणु राजेश)
समन्वयक
शोध एवं विकास समन्वय प्रकोष्ठ

(डॉ. डी.आर. राहुल)
प्राचार्य
शासकीय नेहरू अग्रणी महाविद्यालय
अशोकनगर (म.प्र.)

Scanned by CamScanner